International Journal of Home Science 2020; 6(3): 540-542

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2021; 6(3): 540-542
© 2021 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 25-08-2020
Accepted: 28-09-2020

प्रतिभा कुमारी
शोधार्थी, डॉ॰ ममता कुमारी,
एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातोकत्तर गृह विज्ञान विभाग, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रतिभा कुमारी
शोधार्थी, डॉ॰ ममता कुमारी,
एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातोकत्तर गृह विज्ञान विभाग, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

वृद्धजनों की समस्याओं पर एक विहंगात्मक दृष्टि

प्रतिभा कुमारी

प्रस्तावना

वृद्धावस्था कालक्रमिक आयु बढ़ने के और बढ़ती हुई आयु के विकासात्मक प्रक्रिया का सूचक है, जिसे एक निर्धारित आयु (60) एवं इससे अधिक आयुवर्ग के लोगों की श्रेणी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। किन लोगों को वृद्ध माना जाये, यह बहुत हद तक लोगों के जीवन की गुणवत्ता व स्वास्थ्य की दशा पर निर्भर करता है। आयु के आधार पर सामान्यतः 60 वर्ष एवं उससे अधिक उम्र के व्यक्तियों को वरिष्ठ नागरिक माना जाता है। जबकि विकसित देशों में यह आयु 65 वर्ष निर्धारित है। वृद्धावस्था को जैविकीय, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक रूप में परिभाषित करते हुए प्रतिभा शर्मा ने लिखा है की जैविक रूप से वृद्ध होने का तात्पर्य शारीरिक ह्रास से है जिसके परिणामस्वरूप प्राणी अपने अपने सक्रिय जीवन-विस्तार की अपेक्षा मृत्यु से अधिक नजदीक होता है।मनोवैज्ञानिक रूप से वृद्ध होने का अर्थ व्यक्ति के समायोजित होने की क्षमता से है, जबकि सामाजिक रूप से वृद्ध होने का तात्पर्य विभिन्न समूहों तथा समाज की प्रत्याशाओं के संदर्भ में व्यक्ति की सामाजिक आदतों तथा भूमिकाओं से है। संयुक्त राष्ट्र संघ एवं राष्ट्रीयवृद्ध जन नीति (1999) के अनुसार 60 वर्ष या इससे अधिक आयु के लोगों को वृद्ध, बुजुर्ग या वरिष्ठ नागरिक की संज्ञा दी गयी है।

वृद्धजन एवं उनकी समस्याएँ

परिवर्त्तन प्रकृति का नियम है। जीवन के अंतिम पड़ाव में कई परिवर्त्तन देखे जाते हैं। वृद्धावस्था में होने वाले परिवर्त्तनों के कारण वृद्धजनों को कई समस्याओं से जूझना पड़ता है। वृद्धजनों की समस्याएँ बहुआयामी हैं जो जैविकीय ही नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहलुओं से भी संबंधित है। वृद्धजनों की समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

1. शारीरिक स मस्या

मानव शरीर भी एक मशीन के समान है। समय के साथ इसके पुर्जे भी घिसते टूटते रहते हैं। बढ़ती उम्र, खान-पान तथा आचार-विचार के असंयम से यह प्रक्रिया और अधिक तीव्र एवं जटिल हो जाती है। आयु बढ़ने के साथ-साथ व्यक्ति का शरीर शिथिल होने लगता है। शरीर जर्जर होने ल गता है। शरीर का संचालन करने वाले प्रमुख संस्थानों श्वसन तंत्र, पाचन तंत्र, रक्त-परिसंचरण तंत्र, संवेदी तंत्र इत्यादि की कार्यक्षमता कमजोर पड़ने लगती है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता घटने लगती है। शरीर में अनेक प्रकार के रोगों के लगने की संभावना बढ़ जाती है। वृद्ध व्यक्ति प्रायः रक्तचाप, एनीमिया, जोड़ों का दर्द, डायबिटीज़, गठिया, हृदय रोग एवं जीर्ण रोग इत्यादि रोगों से ग्रसित पाये जाते हैं।

शारीरिक दुर्बलता एवं रोगों के लगने के कारण वृद्ध व्यक्ति दूसरों पर आश्रित हो जाते हैं। यह पराश्रितता उनके लिए अन्य कई समस्याएँ उत्पन्न करते हैं।

2. मानसिक समस्याएँ

अस्वस्थता, शारीरिक क्षीणता व मानसिक रोग बहुत हद तक साथ-साथ चलते हैं। अधिकांश व्यक्ति बुढ़ापे की अनुभूति से ही घबराते हैं, जो उनके मन मानसिक निराशा का संचार करता है। वे मानसिक रूप से अपने आप को इसके लिए तैयार नहीं करते हैं। इस अवस्था में वृद्ध व्यक्ति के सीखने, समझने एवं याद रखने की क्षमता घटने लगती है। शारीरिक व मानसिक कार्यक्षमता में कमी आने के कारण परिवार एवं समाज में वृद्ध की उपयोगिता घटने लगती है। इस कारण वे स्वयं को उपेक्षित एवं असहाय मानने लगते है।

3. आर्थिक स मस्याएँ

आर्थिक समस्याएँ वृद्धजनों की महत्त्वपूर्ण समस्या है। वृद्ध व्यक्तियों के सेवानिवृत्त होने या आर्थिक क्रियाओं से निवृत्त होने के कारण उनकी आय में कमी आ जाती है। आयु बढ़ने के कारण मनुष्य की आवश्यकताएँ कम हो जाती हैं लेकिन चिकित्सा में अत्यधिक पैसा खर्च होने लगता है। वृद्ध व्यक्ति स्वयं के पैसों को अपनी जरूरतों के प्राथमिकता के आधार पर खर्च करते हैं। वैसे वृद्ध व्यक्ति जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परिजनों पर आश्रित होते हैं, उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय होती है। विशेषकर जब उनके एक से अधिक बच्चे हों। धनवान वृद्धों को भी धन की सुरक्षा करने में परेशानी होती है। अक्सर समाचार-पत्रों में देखने को मिलता है कि वृद्धजनों से उनके बच्चे या समाज के लोग उनके धन संपत्ति को लूट लेते हैं या कभी-कभी तो धन लेकर उनकी हत्या तक कर देते हैं।

4. पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याएँ

वृद्धावस्था में शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर होने के कारण वे समूह एवं परिवार से अलग होने लगते हैं जिसके कारण सामाजिक व पारिवारिक संबंधों में बुरा असर होने लगता है। परिवार के सदस्यों के साथ मतभेद निर्माण होने लगता है। नौकरी या व्यवसाय से मुक्त होने के कारण समाज एवं परिवार में उनका वर्चस्व, मान-सम्मान कम होने लगता है, जिससे इन्हें अपना जीवन-यापन करना कठिन लगता है। प्रायः युवा वर्ग अपनी व्यस्तता के कारण माता-पिता के साथ कम समय बिता पाते हैं। कहीं-कहीं तो कई कारणों से बच्चों तथा माता-पिता के बीच संवादहीनता की स्थिति भी देखी जाती है। इसका मुख्य कारण है कि वृद्ध व्यक्ति अपने विचारों और रहन-सहन को बदलना नहीं चाहते हैं और युवा वर्ग उनके विचारों को अपनाना नहीं चाहते हैं।

5. अपेक्षा एवं उपेक्षा का द्वन्द्व

बच्चों के जन्म के साथ ही माता-पिता यह सपना देखने लगते हैं कि बच्चे बड़े होकर उनके बुढ़ापे का सहारा बनेंगे एवं उनकी सेवा करेंगे। जीवन भर कष्टों एवं संघर्षों को झेलते हुए माता-पिता अपने बच्चों को लायक बनाते हैं। बच्चे जब लायक बनते हैं तब वे वर्त्तमान सामाजिक परिवेश में इतना उलझ जाते हैं कि चाहते हुए भी अपने माता-पिता की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते हैं। उनका पारस्परिक संबंध पूर्ववत नहीं होता है। उनके बीच परस्पर विरोधी संघर्ष चलता रहता है। अपने बच्चों से अपेक्षित व्यवहार न मिलने पर वे स्वयं को उपेक्षित, अनुपयोगी, असुरक्षित एवं निराश महसूस क रते हैं।

6. उचित देखभाल की समस्या

संयुक्त परिवार के विघटन, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण के कारण आज परिवार में सदस्यों की संख्या कम होती जा रही है। परिणाम स्वरूप जिस परिवार में कई सदस्य होते हैं, वहाँ तो वृद्धजनों की देखभाल ठीक तरह से हो जाती है, लेकिन एकाकी परिवार की स्थिति में जब घर के सदस्य बाहर चले जाते हैं, तो अक्सर बुजुर्गों की देखभाल करने वाला कोई नहीं होता। भारतीय संस्कृति में माता-पिता एवं वृद्धजनों की सेवा करना पुनीत कर्त्तव्य समझा जाता है। लेकिन कुछ परिवारों में पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति के प्रभाव से पैसों को ही प्राथमिकता दी जाती है। अत्यधिक धन कमाने के चक्कर में तथा भौतिकता की अंधी दौड़ में व्यस्त लोग इस प्रकार बूढ़े-बीमार व्यक्तियों की सेवा को समय की बर्बादी मानते हैं।

7. वृद्धजनों के साथ दुर्व्यवहार

प्रगतिशील सामाजिक परिवेश में कुछ परिवारों में वृद्धजनों की उपेक्षा एवं अनदेखी की जाती है। परिवार के लोग वृद्धजनों को दीन-हीन तथा अवांछनीय मानते हैं। घर के किसी कोने में उन्हें निवासित कर दिया जाता है। कभी-कभी तो किसी धार्मिक स्थल या वृद्धाश्रम में उन्हें ले जाकर छोड़ दिया जाता है। उनके व्यवसाय, संपत्ति, जमा पूँजी इत्यादि पर स्वयं कब्जा जमा लिया जाता है। उनके खाने-पीने तथा अन्य जरूरतों को भी नजरअंदाज कर दिया जाता है ताकि वृद्धजन घर छोड़ कर अन्यत्र चले जाएँ। पुत्र एवं परिवार से मोहग्रस्त वृद्धजन अपने ही घर में अपमानित एवं उपेक्षित जीवन जीने को विवश होते हैं।

8. निष्कर्ष

उपरोक्त प्रकार की समस्याओं के कारण वृद्धजनों की स्थिति दयनीय पायी गयी। उनमें कई शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं के प्रभाव से जीर्ण रोग, अकेलापन, चिंता, अवसाद इत्यादि के लक्षण पाये *गए*।

9. सुझाव

हमें बुजुर्गों को निष्क्रिय एवं निरीह प्राणी नहीं मानना चाहिए। वृद्धजनों की समस्याओं तथा उनके साथ होने वाले दुर्व्यवहार जैसी गंभीर एवं चिंताजनक स्थितियों के प्रति पारिवारिक, सामाजिक एवं संस्थागत सहायता तंत्र को संवेदनशील, अधिक सबल व क्रियाशील होने की आवश्यकता है।

10. सन्दर्भ

1. शर्मा, प्रतिभा, संस्कार आज भी हैं, सृष्टि प्रकाशन
2. mospi.nic.in/default/files